46

मूल्यनिष्ठ शिक्षा का दर्पण : 'रामायण' और 'श्रीमद् भगवद्गीता'

Priyanshi B. Patel
PG Student
Hindi Bhavan Saurashtra University Rajkot, Gujarat

शोधपत्र सारांश :

भारतीय संस्कृति विश्व की तमाम संस्कृतियों में सिरमौर है। इस संस्कृति के पास जो ख़जाने भरे पड़े हैं, जिस कारण विश्व की संस्कृतियाँ भी भारत को सम्मान की दृष्टि से देखती है। भारतीय संस्कृति में 'रामायण' और 'श्रीमद् भगवद्गीता' दोनों बहुत ही मूल्यवान ग्रन्थ है। आदिकाव्य वाल्मीकि रामायण को मानवीय मूल्यों का एक महान् विश्वकोश कहा जाता है। रामायण भारतवर्ष का एक सिद्ध ग्रन्थ है। हमारे जितने भी आदर्श हैं, उनका इस ग्रन्थ में हम उदात्त विशुद्ध रूप पाते हैं। आदर्श पिता, आदर्श माता, आदर्श पुत्र, आदर्श भ्राता, आदर्श पत्नी, आदर्श राजा, आदर्श प्रजा-इत्यादि आदर्श हो सकते हैं; उनका जीता-जागता स्वरूप हमें रामायण में मिलता है। महात्मा गाँधीजी के मत से-'गीता मेरा बाइबल या कुरान ही नहीं, बल्कि प्रत्यक्ष माता ही है।' तो लोकमान्य तिलक इस ग्रन्थ को अमूल्य हीरे के रूप में देखते हैं। श्रीमद् भगवद्गीता के अनुसार जिसका निर्मल चरित्र है, उसे ही उच्चतम स्थान मिल सकता है। जाति, धन और पद अर्थविहिन है। निर्भयता, अंत:करण की शुद्धि, ज्ञान व योग में निष्ठा, दान, इन्द्रियनिग्रह, यज्ञ, स्वाध्याय, तप, सरलता, अहिंसा, सत्य, अक्रोध, (कर्म फल का) त्याग, शान्ति, निंदा का त्याग, प्राणीमात्र पर दयाभाव, अलोलुपता, मृदुता, लज्जा, अचंचलता, तेज, क्षमा, धैर्य, पवित्रता, अद्रोह और अभिमान का त्याग- ये २६ गुण उत्तम मानव के लक्षण हैं। श्रीकृष्ण संसारी मनुष्य को तीन अवगुणों से बचने की सलाह देते हैं। काम, क्रोध और लोभ-ये तीनों आत्मा का नाश करनेवाले नरक के द्वार हैं, अत: उसका त्याग अत्यावश्यक है। गीता दर्शन धर्म का रक्षक, कर्म का प्रेरक और ब्रह्म-विद्या का आध्यात्मिक सत्य ज्ञान इस धरा पर भगवान श्रीकृष्णचन्द्र की असीम ईश्वरी कृपा से प्रगट हुआ है। आज ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जिससे प्रत्येक मनुष्य अपने मूल्यों, संस्कृति, एकता, सत्यनिष्ठा के बलबूते पर मूल्यनिष्ठ जीवन जी सके। इन दोनों ग्रंथों में वर्णित ये ऐसे मूल्य हैं, जिसके द्वारा ही मानवजीवन सुखी बन सकता है। मानवकल्याणी मूल्यनिष्ठ शिक्षा 'रामायण' और 'श्रीमद् भगवद्गीता' जैसे अनुकरणीय ग्रन्थों में भरी पड़ी है। आज जरूरत है, ऐसी शिक्षा की जो आजिविका के साथ-साथ मूल्यनिष्ठ शिक्षा से विशिष्ट मानव का निर्माण करे; जो अंतत: सभ्य समाज व देश की उन्नति में सहयोगी हो ! हम गर्व के साथ कह सकते हैं कि हमारे अमूल्य ग्रंथ 'रामायण' और 'श्रीमद् भगवद्गीता' में मूल्यनिष्ठ शिक्षा का वह ख़जाना है, जिससे हमारी विभिन्न समस्याओं का हल सुचारु ढंग से मिल सकता है।

बीज शब्द :

सिरमौर, भारतवर्ष, आर्षकाव्य, आप्तवाक्य, अन्वेषण, विरासत, मूल्यसिक्त, प्रकाशस्तंभ, अनुगमन, सारथि, इन्द्रियनिग्रह, स्थितप्रज्ञ, विश्वबंधुत्व, धनुर्विद्या

प्रस्तावना :

भारतीय संस्कृति विश्व की तमाम संस्कृतियों में सिरमौर है। इस संस्कृति के पास ऐसे ख़जाने भरे पड़े हैं, जिस कारण विश्व की संस्कृतियाँ भारत को सम्मान की दृष्टि से देखती है। भारतीय संस्कृति में 'रामायण' और 'श्रीमद्

भगवद्गीता' दोनों ऐसे मूल्यवान ग्रन्थ है, जिसकी महत्ता सारा संसार समझता है। इन दोनों ग्रंथों ने हमें वैश्विक गरिमा दिलायी है। इन दोनों ग्रंथों में जीवन जीने की वो कला सिखायी गयी है, जिससे मानव योग्य तरीके से अपना जीवनयापन कर सकता है। ये दोनों ग्रन्थ न केवल हिन्दुओं के लिए बल्कि वैश्विक सन्दर्भ में समस्त धर्मियों के लिए पथप्रदर्शक के रूप में सुविख्यात हैं। किसी भी समस्या का समाधान इन ग्रंथों में विद्यमान है। हम गर्व के साथ कह सकते हैं कि हमारे अमूल्य ग्रंथ 'रामायण' और 'श्रीमद् भगवद्गीता' में मूल्यनिष्ठ शिक्षा का वह ख़जाना है, जिससे हमारी विभिन्न समस्याओं का हल सुचारु ढंग से मिल सकता है।

आदिकाव्य वाल्मीकि रामायण को मानवीय मूल्यों का एक महान् विश्वकोश कहा जाता है।[1] रामायण भारतवर्ष का सिद्ध ग्रन्थ है। यह भारतीय सभ्यता का चूडांत निदर्शन है-भारतीय संस्कृति का आगार है। केवल इसी ग्रन्थ के अध्ययन से हम लोग भारतीय सभ्यता की रूपरेखा खींच सकते हैं, भारतीय आदर्श को भलीभाँति समझ सकते हैं। है भी यह भगवदावतार मर्यादापुरुषोत्तम श्रीरामचंद्र का पवित्र चरित्र ! हमारे जितने भी आदर्श हैं, उनका इस ग्रन्थ में हम उदात्त विशुद्ध रूप पाते हैं। आदर्श पिता, आदर्श माता, आदर्श पुत्र, आदर्श भ्राता, आदर्श पत्नी, आदर्श राजा, आदर्श प्रजा-इत्यादि जितने भी भारतीय समाज के आदर्श हो सकते हैं; उनका जीता-जागता स्वरूप हमें रामायण में मिलता है। इसी कारण यह भारतीयों की अमूल्य निधि है-अनमोल खजाना है।[2] धर्मशास्त्र के लिए यह ग्रन्थ परम प्रमाण है ही, अन्य ऐतिहासिक कथाएँ भी बहुत हैं, अर्थशास्त्र की भी पर्याप्त सामग्री है। व्यवहार तथा आचार की भी बातें हैं, कुशलमार्ग का भी प्रदर्शन है।

वाल्मीकि के पूर्वजीवन से कोई अनभिज्ञ नहीं है। जमानेभर की लूटमार मचाने वाला यह लुटेरा कामाशक्त कौंच वध से दु:खी हो जाता है और उनके मुख से नि:सृत-

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगम: शाश्वती: समा:।
यत्कौच्चमिथुनादेकमवधी: काममोहितम्॥

यह दिव्य और नैसर्गिक कविता अखिल वाक्शक्ति की स्वत: प्रेरणा है। इसीलिए उसे आर्षकाव्य, आप्तवाक्य अथवा दिव्य वाणी कहते हैं।

विश्वधर्म में गीताशास्त्र के समान कोई दूसरा शास्त्र नहीं है। आध्यात्मिक अन्वेषण की दिशा में गीता का सृजन मानव जाति के लिए एक वरदान है। सृष्टि के सृजन एवं पालन हेतु कर्मयोग एवं ज्ञानयोग का सन्देश भगवद्गीता के रूप में विश्व को प्राप्त हुआ। इस ग्रन्थ में नर (अर्जुन) और नारायण (वासुदेव) के आलोचनात्मक प्रश्नों-उत्तरों द्वारा कर्म सिद्धांत का वैज्ञानिक प्रतिपादन ज्ञान-विज्ञान के रूप में समस्त प्राणीमात्र के लिए प्रस्तुत किया गया है। गीता के विचार-विमर्श, गहन चिंतन एवं मनन से एक नवीन दर्शन की प्राप्ति हुई जिसने जड़-चेतन के अनूठे वैज्ञानिक अनुभवों के बहुत से रहस्यों को उद्घोषित किया है। इसमें धर्मनिष्ठा का आधार तर्क बुद्धि से प्रकाशित है जो नीतिशास्त्र के इतिहास में एक अनोखा स्थान प्राप्त कर सकता है।[3] महात्मा गाँधीजी गीता माहत्म्य समझाते हुए कहते हैं-'गीता मेरा बाइबल या कुरान ही नहीं, बल्कि प्रत्यक्ष माता ही है। अपनी लौकिक माता से तो कई दिनों से मैं बिछुड़ा हूँ, किन्तु तभी से गीता मैया ने मेरे जीवन में माता का स्थान ग्रहण कर लिया है। आपत्काल में वही मेरा सहारा है।'[4] तो लोकमान्य तिलक इस ग्रन्थ को अमूल्य हीरे के रूप में देखते हैं।

सामान्यत: शिक्षा के अंतर्गत वे सभी बातें हैं, जो किसी को किसी विषय का अच्छा ज्ञाता या उपयुक्त कार्यकर्ता बनाने के लिए पढ़ाई या सिखाई जाती है। शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य को विद्या या विषय का ज्ञाता बनाने के सिवा नैतिक, मानसिक और शारीरिक सभी दृष्टियों से कर्मठ, योग्य, सदाचारी, समर्थ, स्वावलम्बी आदि बनाना भी होता है। शिक्षा यानी नसीहत या सीख। 'शिक्षा का कार्य और कुछ नहीं, बल्कि मनुष्य की सांस्कृतिक पूँजी का उसकी अगली पीढ़ी में सुसंस्कृत ढंग से प्रवेश कराना है। शिक्षा के कारण ही एक-एक व्यक्ति विगत हजारों वर्षों की सांस्कृतिक विरासत का

संवाहक बन जाता है।'[5] शिक्षा मनुष्य की अंतर्निहित भावनाओं को प्रकट करने का साधन है। शिक्षा के सहयोग से सुषुप्त-ज्ञान प्रस्फुटित होता है I इस प्रस्फुटन से व्यक्ति लाभान्वित होता है। व्यक्ति की चिंतन शक्ति, अभिरुचि, आवश्यकता, क्षमता, चरित्र आदि के निर्माण एवं विकास की दृष्टि से शिक्षा का वैयक्तिक महत्त्व है। महात्मा गाँधीजी ने शिक्षा की कल्पना में मनुष्य के चरित्र-निर्माण को महत्त्व दिया (जो कि शिक्षा और जीवन की घनिष्ठता का द्योतक है)- समस्त ज्ञान (शिक्षा) का उद्देश्य चरित्र का निर्माण होना चाहिए।[6] वस्तुत: शिक्षा के संपर्क एवं सहयोग से जीवन उत्तरोत्तर उत्कृष्ट होता चला जाता है, मानव एवं मानव-समाज का सर्वांगीण विकास होता है। हम यहाँ इसी बात को गहराई से समझने के लिए 'रामायण' और 'श्रीरामचरितमानस' में उद्घोषित मूल्यनिष्ठ शिक्षा को केन्द्र में रखकर अपने विचार रखना चाहते हैं।

रामायणकालीन संस्कृति अनुकरणीय व्यवहारों की सीख देती है। ग्रन्थ में निहित विचारों को देखने से ज्ञात होता है कि इसमें जीवन जीने की वह संजीवनी है, जो मानवमात्र को सही मार्ग दिखाती है। भारतीय संस्कृति का अध्ययन किया जाए तो स्पष्ट प्रतीत होता है कि चरित्रवान मनुष्यों ने ही उसे जीवित व समुन्नत रक्खा है। 'रामायण' का आरंभ ही चरित्र के आधार पर हुआ है। उच्चतम चरित्र कैसा होता है, उसका चित्रांकन निम्नांकित श्लोकों में देखिए :

चारित्रेण च को युक्त: सर्वभूतेषु को हित: ।
विद्वान् क: क: समर्थश्च कश्चैक: प्रियदर्शन: ॥
इक्ष्वाकुवंशप्रभवो रामो नाम जनै: श्रुत: ।
नियतात्मा महावीर्यो द्युतिमान् धृतिमान् वशी ॥
धर्मज्ञ: सत्यसंघश्च प्रजानां च हिते रत: ।
यशस्वी ज्ञानसम्पन्न: शुचिर्वश्य: समाधिमान् ॥[7]

सदाचारी, समस्त प्राणियों का हितेच्छु, विद्वान्, सामर्थ्यशाली और सुन्दर पुरुष की वाल्मीकि की कल्पना श्रीराम में साकारित होती दिखाई देती है। इक्ष्वाकु वंश में जन्म लेनेवाले श्रीराम संयमी, महावीर, कान्तिमान, धैर्यवान, जितेन्द्रिय, धर्म के ज्ञाता, सत्यप्रतिज्ञ, प्रजाहितेच्छु, यशस्वी, ज्ञानी, पवित्र, एकाग्रचित्त हैं। वे बुद्धिमान्, नीतिमान्, उत्तम वक्ता, शोभायमान, शत्रुसंहारक (रामायण 1/1/1); प्रजापालक, धर्म के रक्षक, श्रीसंपन्न, वैरीविध्वंसक (रामायण 1/1/13); स्वधर्म के पालक, तत्त्ववेत्ता, धनुर्वेद में प्रवीण (रामायण 1/1/14) और स्मरणशक्ति से युक्त, प्रतिभासंपन्न उदार हृदय वाले, चतुर व समस्त लोकों में प्रिय (रामायण 1/1/15) हैं। रामायण में आदर्शवाद और उच्च नैतिक मापदण्ड का चित्रण मिलता है। रामायण के नायक राम अपने पिता के वचन को पूरा करने के लिए राज्य छोड़कर वन में जाते हैं और अनेक कष्ट सहन करते हैं। इतना ही नहीं, एक आदर्श राजा का उदाहरण प्रस्तुत करने के लिए वे सीता को त्याग देते हैं। रामायण में त्याग और आदर्श परिवार की झाँकी मिलती है। राम के पात्र द्वारा यहाँ उनकी चारित्रिक विशेषताओं का जो अनुकरणीय आलेखन हुआ है, वह हमें उनके मर्यादापुरुषोत्तम रूप की झाँकी कराता है। आज के समय में ऐसे मूल्यसिक्त मानव का होना असम्भव-सा प्रतीत होता है। राम ने एक आदर्श राजा एवं राज्य का चित्र प्रस्तुत किया, इसलिए आज भी रामराज्य को सर्वश्रेष्ठ राज्य माना जाता है। इतना ही नहीं, एक आदर्श राज्य की तुलना रामराज्य से की जाती है। हमें यह कहना जरूरी लगता है कि राम के इन गुणों में से कुछेक गुण यदि किसी मनुष्य में आ जाए तो उस मनुष्य के साथ-साथ समाज और देश समृद्ध हो सकता है।

रामायण का महत्त्वपूर्ण स्त्री-पात्र सीता है, जो समस्त संसार में आदर्श भारतीय नारी का सादगीपूर्ण चित्र प्रस्तुत करता है। सीता का चरित्र एक आदर्श स्त्री के रूप में चित्रित हुआ है, जो प्रत्येक काल में नारियों के लिए अनुकरणीय था और आज भी है। सीता कठिन परिस्थितियों में अपने पतिव्रत धर्म व कर्तव्य का पालन करती है। सीता का अपने पति के साथ वनगमन, वहाँ अनेक कष्टों को सहना, रावण के द्वारा उसका हरण किए जाने पर अपने शील की रक्षा करना,

अग्निपरीक्षा देना, पति के द्वारा त्याग किए जाने पर भी पति के प्रति मन में तनिक भी दुर्भाव नहीं लाना, लव-कुश के प्रति पूर्ण जिम्मेदारी के साथ माता का कर्तव्य निभाना-ये सभी बातें आज की भारतीय स्त्रियों को आदर्श नारीत्व की शिक्षा देती है।

दशरथजी विद्वान् हैं, पर अभिमानी नहीं; मुनिमंडली उनकी आश्रित है, पर वे उसकी आज्ञा का पालन करते हैं; शास्त्रज्ञ है, पर कुलपराम्परानुसार गुरुओं का आदर करते हैं। राजा हैं, सत्यप्रतिज्ञ और प्रजा के हित में तत्पर हैं; शासक हैं, अनुचर उनकी परिचर्या करते हैं; पर मुनि की सेवा व सत्कार वे स्वयं ही करते हैं। शील-स्वभाव और दानी स्वभाव भी अवधेश के चरित्र की एक विशेषता है। लक्ष्मण महावीर, न्याय के पक्षधर, सेवाधर्मी, परम त्यागी, भ्रातावत्सल हैं। जिस तरह से लक्ष्मण ने राम के वनगमन में साथ दिया और भैया-भाभी की सेवा की, वह अतुलनीय है। भरत भावुक, सौमनस्य, विवेकी, भ्रातावत्सल, आज्ञाकारी हैं। लक्ष्मण की तरह वह राम के परोक्ष सेवक हैं, जो नंदीग्राम में रहकर-उनकी आज्ञा शिरोधार्य कर अयोध्या का राज्य अमानत के रूप में संभालते हैं। शत्रुघ्न विवेकी, वीर और भ्रातावत्सल है। भरत राम के सेवक हैं, तो शत्रुघ्न भरत के सेवक हैं। इस अर्थ में शत्रुघ्न राम के दासानुदास हुए I हनुमान में शूरता, वीरता, बुद्धि, बल, विद्या, श्रद्धा, भक्ति, विनय, दया आदि गुण विद्यमान हैं। लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न एवं हनुमान-इन चारों का राम के प्रति भक्तिभाव अनन्य है, किसी अन्य देश में इनके समकक्ष दृष्टांत नहीं मिल सकते।

श्रीमद् भगवद्गीता के अनुसार जिसका निर्मल चरित्र है, उसे ही उच्चतम स्थान मिल सकता है। जाति, धन और पद अर्थविहिन है। चरित्र-संपन्न महापुरुषों के चरित्र से सम्बंधित जीवनादर्शों के उदाहरणों का सामान्य मनुष्यों के नैतिक जीवन पर अत्यधिक प्रभाव पड़ता है I वे प्रकाशस्तंभ की तरह औरों का मार्गदर्शन करते हैं। गीता कहती है-

यद्यादाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जन: ।
स यत्प्रमाण कुरुते लोकस्तदनुवर्तते ।।[8]

श्रेष्ठ व्यक्तियों के आचरण के अनुसार ही अन्य पुरुष वर्तते हैं तथा वे उन्हीं के आदर्शों का अनुगमन करते हैं। श्रेष्ठ चरित्र निर्माण करने के लिए भारतीय संस्कृति के अनुसार सात्त्विक वृत्तियों को अपनाना आवश्यक है। तभी अंत:करण शुद्ध रह सकता है और दुश्चरित्र सम्बन्धी भाव हृदय में नहीं आएँगे। ऐसे ही मनुष्य को चरित्रवान कहा जाता है। किसी मनुष्य का चरित्रहीन कार्य या दुराचरण के कारण अपयश होना और उसकी कीर्ति को धब्बा लगना भारतीय संस्कृति के अनुसार मृत्यु से बढ़कर समझा जाता है :

चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते I

- भगवद्गीता, 2/34

वेदों की दृष्टि में किसी से द्वेष करना वर्ज्य है। द्वेष न करके प्राणीमात्र का मित्र होने पर बल दिया गया है। इसी सन्दर्भ में श्रीकृष्ण भगवद्गीता में कहते हैं :

अद्वेष्टा सर्वभूतानां मैत्र: करुण एव च ।
निर्ममो निरहंकार: समदु:खसुख: क्षमी ।।
संतुष्ट: सततं योगी यतात्मा दृढ़निश्चय: ।
मय्यर्पितमनोबुद्धिर्यो मे भक्त: स मे प्रिय: ।।[9]

जो किसीसे द्वेष नहीं करता, जो प्राणीमात्र का मित्र है, दयाशील है, क्षमाशील है, जो ममता और अहंकार से रहित है, जिसके लिए सुख और दु:ख दोनों समान है, संतोषी, योगनिष्ठ, मन को वश में रखनेवाला, दृढ़ निश्चयी-ऐसे लक्षणयुक्त भक्त भगवान को अतिप्रिय हैं।

गीता सख्यभाव को प्रदर्शित करती है। श्रीकृष्ण जैसे परम सखा आपको कहीं नहीं मिलेंगे। सखा के रूप में वे अपने सब सखाओं में बलवान हैं। सबसे अधिक भाषा के ज्ञाता, वक्ता और विद्वान्, प्रतिभा, दक्षता, करुणा, वीरता,

विदग्धता, बुद्धिमत्ता, क्षमा में वे अतुलनीय हैं। अर्जुन, भीम, द्रौपदी, सुदामा, ग्वालबाल-आदि सब श्रीकृष्ण के सखा हैं। श्रीकृष्ण की ये विशेषताएँ श्रीराम की तरह अनन्य हैं। जहाँ श्रीराम मर्यादापुरुषोत्तम हैं, वहाँ श्रीकृष्ण लीलापुरुषोत्तम हैं। दूसरी ओर अर्जुन के मूल्यनिष्ठ जीवन के द्वारा गीताकार ने कई पहलुओं की ओर निर्देश किया है। अर्जुन भ्रातावत्सल, परम वीर, सत्य का पक्षधर, परिजनों में प्रिय, आदर्श सखा, बुद्धिशाली, कर्मयोगी हैं। उन्होंने श्रीकृष्ण जैसे सखा को सारथि के रूप में चयनित करके युद्धभूमि में जो कौशल दिखाया वह अनुकरणीय है। गीता में उत्तम मानव के लक्षण बताये गए हैं, यथा :

अभयं सत्त्वसंशुद्धिर्ज्ञानयोगव्यवस्थिति: ।
दानं दमस्च यज्ञस्च स्वाध्यायस्तप आर्जवम् ॥
अहिंसा सत्यमक्रोधस्त्याग: शान्तिरपैशुनम् ।
दया भूतेष्वलोलुप्त्वं मार्दवं हीरचाप्लम् ॥
तेज: क्षमा धृति: शौचमद्रोहो नातिमानिता ।
भवन्ति सम्पदं दैवीमभिजातस्य भारत ॥[10]

निर्भयता, अंत:करण की शुद्धि, ज्ञान व योग में निष्ठा, दान, इन्द्रियनिग्रह, यज्ञ, स्वाध्याय, तप, सरलता, अहिंसा, सत्य, अक्रोध, (कर्म फल का) त्याग, शान्ति, निंदा का त्याग, प्राणीमात्र पर दयाभाव, अलोलुपता, मृदुता, लज्जा, अचंचलता, तेज, क्षमा, धैर्य, पवित्रता, अद्रोह और अभिमान का त्याग- ये (२६ गुण) उत्तम मानव के लक्षण हैं। श्रीकृष्ण संसारी मनुष्य को तीन अवगुणों से बचने की सलाह देते है:

त्रिविधं नर्केस्येदं द्वारं नाशनमात्मन: ।
काम: क्रोधस्तथा लोभास्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत् ॥[11]

काम, क्रोध और लोभ-ये तीनों ही आत्मा का नाश करनेवाले नरक के द्वार हैं, अत: उसका त्याग अत्यावश्यक है।

गीता के द्वितीय अध्याय में भगवान श्रीकृष्ण ने 'स्थितप्रज्ञ' मानव का आदर्श रखा है और ऐसे गुणों का विवेचन किया है, जिन पर चलकर मनुष्य सांसारिक कर्तव्यों को करता हुआ मोक्ष को प्राप्त कर सकता है। गीता के अनुसार, ऐसा व्यक्ति, जो सुख-दु:ख, विजय-पराजय आदि प्रत्येक स्थिति में अविचलित रहते हुए दृढ़ता से कार्य करता है, उसे ही 'आदर्श मानव' या 'स्थितप्रज्ञ मानव' कहा जा सकता है। 'स्थितप्रज्ञ मानव' के गुणों का वर्णन करते हुए गीता में कहा गया है कि व्यक्ति मन में स्थित सारी कामनाओं को त्याग देता है और आत्मा से ही आत्मा में संतुष्ट रहता है। जो दु:ख से उद्विग्न नहीं और सुख की इच्छा नहीं करता, जो राग, भय और क्रोध से सर्वथा मुक्त है, जो शुभ अथवा अशुभ वस्तुओं के प्राप्त होने पर न प्रसन्न होता है न द्वेष करता है, जो पूरी तरह इन्द्रियों को विषयों से हटाकर अपने वश में किए हुए है, वह 'स्थितप्रज्ञ' है अर्थात् उसकी बुद्धि स्थिर होती है। जो व्यक्ति इन गुणों को जीवन में अपना लेता है, वह समाज के लिए प्रेरणा का स्रोत बन जाता है।

गीता दर्शन धर्म का रक्षक, कर्म का प्रेरक और ब्रह्म-विद्या का आध्यात्मिक सत्य ज्ञान इस धरा (पृथ्वी) पर भगवान श्रीकृष्णचन्द्र की असीम ईश्वरी कृपा से प्रगट हुआ है। यह द्वन्द्वों का प्रतिहार कर सामाजिक कर्म सिद्धांत के अनुसार जीवनयापन के लिए, सत्यसंकल्प, धर्म, कर्म और नैतिकता के माध्यम से भाव भावनाओं से युक्त ज्ञान वैराग्य एवं कर्तव्यपरायण की शिक्षा प्रदान करता है।[12] गीता की विश्वबंधुत्व की शिक्षा आज के मानव के लिए विशेष उपयोगी सिद्ध हो सकती है, इसकी शिक्षाएँ आधुनिक मानव का मार्गदर्शन कर सकती है। वे मनुष्य को अपना कर्तव्य पालन करने के लिए विवश करती हैं। आज का मानव गीता द्वारा प्रतिपादित निष्काम कर्म का यदि पालन करें, तो उसे मानसिक

और आत्मिक शांति प्राप्त हो सकती है। आज के मानव को चाहिए कि वह गीता की शिक्षाओं को अपने जीवन में स्थान देने का सतत प्रयत्न करें।

भिन्नार्थक रूप में यदि शिक्षा को लिया जाए तो प्राचीन शिक्षा-पद्धति और वर्तमान शिक्षा-पद्धति में बहुत बड़ा अंतर विद्यमान है। आज जहाँ वैज्ञानिक व तकनिकी दृष्टि से शिक्षा ली-दी जा रही है, वहाँ प्राचीन समय में आश्रम संस्कृति अस्तित्व में थी। उस समय गुरूजनों का आदर सत्कार बड़े प्रेमभाव से किया जाता था। जब विश्वामित्र श्रीराम और लक्ष्मण को यज्ञ रक्षा हेतु माँगने आये तब उन दोनों की आयु और पुत्र-प्रेमवश दशरथ उन्हें वहाँ भेजने से इनकार करते हैं। तब वशिष्ठजी का कहना कि-

एष विग्रहवान धर्म एष वीर्यवतां वर:।
एष विद्याधिको लोके तपसश्च परायणम्॥[13]

ये श्रीराम तथा महर्षि विश्वामित्र साक्षात् धर्म की मूर्ति हैं I ये बलवानों में श्रेष्ठ हैं। विद्या के द्वारा ही ये संसार में सबसे बढ़े-चढ़े हैं। तपस्या के तो ये विशाल भंडार ही हैं। 'ऐष: अस्त्रान् विविधान् वेत्ति त्रैलोक्ये सचराचरे।' चराचर प्राणियों सहित तीनों लोकों में जो नाना प्रकार के अस्त्र हैं, उन सबको ये जानते हैं। वसिष्ठजी की ये बातें सुनकर राजा दशरथ अपने दोनों पुत्र (राम-लक्ष्मण) को महर्षि विश्वामित्र के साथ राक्षस-संहार के लिए भेजते हैं। हम जानते हैं, राम-लक्ष्मण ने अपनी धनुर्विद्या से आतंकी राक्षसों का नाश किया। अभिप्रेतार्थ यही कि गुरुजनों या बड़ों के द्वारा दी गयी विद्या पर या स्वयं उन पर श्रद्धा एवं विश्वास रक्खा जाये तो; व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र का भला हो सकता है। हमारे ये विश्वप्रसिद्ध दोनों ग्रन्थ यही शिक्षा देते हैं।

शिक्षा मानुषी देह के लिए सबसे जरूरी परमावश्यक मूल्य है। ''विद्याविहीन नर: पशु।'' अर्थात् बिना शिक्षा के मानव और पशु में कोई भेद नहीं रह जाता; महत्त्वपूर्ण बात मूल्यनिष्ठ शिक्षा की है।वर्तमान समय में मूल्यनिष्ठ शिक्षा की अत्यावश्यकता है। वर्तमान परिवेश में पारम्परिक शिक्षा विद्यार्थियों में विशिष्ट मानसिक दक्षताओं और ज्ञान का ही विकास करती है। इससे वे सिर्फ अपनी जीविका कमाने के ही योग्य बनते हैं। आज ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जिससे प्रत्येक मनुष्य अपने मूल्यों, संस्कृति, एकता, सत्यनिष्ठा के बलबूते पर मूल्यनिष्ठ जीवन जी सके। इन दोनों ग्रंथों में वर्णित ये ऐसे मूल्य हैं, जिसके द्वारा ही मानवजीवन सुखी बन सकता है। मानवकल्याणी मूल्यनिष्ठ शिक्षा 'रामायण' और 'श्रीमद् भगवद्गीता' जैसे अनुकरणीय ग्रन्थों में भरी पड़ी है। आज जरूरत है, ऐसी शिक्षा की जो आजिविका के साथ-साथ मूल्यनिष्ठ शिक्षा से विशिष्ट मानव का निर्माण करे; जो अंतत: सभ्य समाज व देश की उन्नति में सहयोगी हो!

निष्कर्ष रूप में यही कह सकते हैं कि 'रामायण' और 'श्रीमद् भगवद्गीता' ऐसे अनुकरणीय ग्रन्थ हैं जिससे मनुष्य अपनी जीवननैया को भलीभाँति पार लगा सकता है। ये दोनों ग्रन्थ भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर हैं। 'रामायण' और 'श्रीमद् भगवद्गीता' दोनों ग्रन्थ मूल्यनिष्ठ शिक्षा का ऐसा दर्पण है जिसमें प्रत्येक मनुष्य अपनी साफ और सच्ची तस्वीर देख सकता है। वर्तमान समय में जहाँ हरएक व्यक्ति या चीजों का अवमूल्यन हो रहा है, ऐसे में हमें ऐसे ही ग्रंथों की शरण में जाना पड़ेगा जो हमें सही-सही राह दिखाएँ। उम्मीद ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्वास है कि 'रामायण' और 'श्रीमद् भगवद्गीता' भूले-भटके मनुष्यों का पथ-निदर्शन करेगा !

सन्दर्भ सूची :

1. चतुर्वेदी, डॉ.शिवदत्त : वाल्मीकि रामायण में राजनीति, हंसा प्रकाशन जयपुर, प्रथम संस्करण 2010, पृ.21
2. उपाध्याय, श्रीबलदेवजी : मानस की महत्ता, (कल्याण, भाग-13, संख्या-2), गीता प्रेस गोरखपुर, पृ.1015
3. वर्मा, बी.एम. : भगवद्गीता दर्शन का कर्म सिद्धांत, राधा पब्लिकेशन्स नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2009, भूमिका से, पृ.XI
4. तिलक, लोकमान्य बाल गंगाधर : श्रीमद् भगवद्गीता रहस्य, मनोज पब्लिकेशन्स, संस्करण 2017, पृ.7

5. शर्मा, डॉ.मोहिनी : हिन्दी उपन्यास और जीवन-मूल्य, साहित्यागार प्रकाशन जयपुर, 1986, पृ.31
6. Gandhi, M.K. : M.K.Gandhi to the Student (Navajivan), Page.160
7. वाल्मीकि रामायण, 1/1/3, 8,12
8. श्रीमद् भगवद्गीता, 3/21
9. श्रीमद् भगवद्गीता, 12/13-14
10. श्रीमद् भगवद्गीता, 16/1-2-3
11. श्रीमद् भगवद्गीता, 16/21
12. वर्मा, डॉ.बी.एम. : भगवद्गीता दर्शन का कर्म सिद्धांत, राधा पब्लिकेशन्स नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2009, पृ.331
13. वाल्मीकि रामायण, 1/21/10